साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 04
April 2017

एक महान आत्मा

रिशु राज

एक दीन-दुखी से भी दुखी
दुबला पतला सा एक बुढ्ढा
साधारण कद का आदमी
उम्र की बोझ से झुकीं पीठ
हाथ में थामे एक डंडा
गोल गोल शीशों वाला
आँख में लगा चश्मा
कहते है सब
रखते थे पॉकेट में एक घडी
सर पे न टोपी
न पैर में चप्पल
एक ही धोती में करता था गुजरा
वो बेसहारों का सहारा
क्या याद है तुम्हे वो
उस आदमी का नाम
मोहन दस करम चाँद गाँधी
या की महता गाँधी
या की राष्ट्रपिता

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 04
April 2017

या की बापू
या की केवल
एक महान आत्मा